स्थिरलक्ष्मी कामना हेतु
दक्षिणामुखी शंख पर कल्प प्रयोग

कहा जाता है कि लक्ष्मी चंचला होती हैं और एक स्थान पर स्थिर नहीं होतीं। परन्तु शास्त्र सम्मत ऐसे कई प्रयोग हैं, जिन्हें यदि एक निश्चित मुहूर्त में यदि सम्पन्न किया जाये तो माँ लक्ष्मी भी स्थिर हो सकती हैं। स्थिर लक्ष्मी की कामना हेतु सफल प्रयोग है :-**दक्षिणामुखी शंख पर कल्प प्रयोग**

सामग्री : दक्षिणामुखी शंख, चांदी या कांसे का कटोरा, पीला वस्त्र, हल्दी से रंगे चावल

विधि : अपने सामने एक छोटी चौकी या पीढ़ा रखें, उस पर पीला वस्त्र बिछा कर शंख को रखें। अपने दाहिने तरफ दीप जलायें एवं हाथ में पुष्प, अक्षत व जल ले कर संकल्प करें :

संकल्प : इस पृथ्वी पर भारत वर्ष देश के (राज्य का नाम बोलें) में रहने वाला/वाली मैं (अपना नाम व गोत्र बोलें) आज अंग्रेजी तारीख (तारीख बोलें) को स्थिर लक्ष्मी प्रप्ति हेतु दक्षिणामुखी शंख पर कल्प प्रयोग करनेका संकल्प लेता/लेती हूँ।

अब निम्न मंत्र के जप के साथ चावल के दाने अपने मध्यमा + अनामिका + अंगुठे के सहायता से शंख में डालें। मंत्र जप के साथ चावल डालने की विधि **सवा घंटे** तक करनी है, फिर शंख को चावल समेत पीले वस्त्र में बांध कर चावल से भरे कटोरे पर रख दें एवं सामने चौकी/पीढ़े पर रख कर पंचोपचार पूजन करें (पुष्प, चंदन/गंध, प्रसाद, धूप, दीप अर्पित करें) एवं श्री सुक्त के मंत्रों के साथ धी की आहूति दें, आरती करें। कटोरे समेत शंख को ऐसे स्थान पर रखें की रोजाना धूप-दीप दिखा सकें।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी ममगृहे आगच्छ आगच्छ धन पूरय पूरय चिन्ताम् तूरय स्वाहा

या

ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं स्वर्णलक्ष्मी सिद्धिर्भवः स्थापय स्थापय जाग्रय जाग्रय मम गृहे पूर्ण लक्ष्मयै नमः

Disclaimer : यहां दी गई जानकारियां विभिन्न श्रोतों, साधनों व यायावर व्यक्तियों के मत से लिया गया है, प्रकाशक की सहमती सामिल नहीं है।
सिर्फ जानकारियां दी गई हैं, किसी भी विचार या क्रिया को करना या मानना जातक की अपनी व्यक्तिगत सोच व विवेक पर निर्भर है।

श्रीसुक्त के निम्न ऋचाओं से अग्नि में घी की आहुति दें :

श्री सुक्तम्

ॐ ॥ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ ३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८॥

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरी□र्सवभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४॥

Disclaimer : यहां दी गई जानकारियां विभिन्न श्रोतों, साधनों व यायावर व्यक्तियों के मत से लिया गया है, प्रकाशक की सहमती सामिल नहीं है।
सिर्फ जानकारियां दी गई हैं, किसी भी विचार या क्रिया को करना या मानना जातक की अपनी व्यक्तिगत सोच व विवेक पर निर्भर है।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६॥

श्रीसुक्त (हिन्दी अनुवाद)

१. हे जातवेदा अग्निदेव आप मुझे सुवर्ण के समान पीतवर्ण वाली तथा किंचित हरितवर्ण वाली तथा हरिणी रूपधारिणी सुवर्नमिश्रित रजत की माला धारण करने वाली, चाँदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली, चंद्रमा के सदृश्य प्रकाशमान तथा चंद्रमा की तरह संसार को प्रसन्न करने वाली या चंचला के सामान रूपवाली हिरण्मय हीं जिनका शरीर है, ऐसे गुणों से युक्त माता लक्ष्मी को मेरे लिए बुलायें।

२. हे जातवेदा अग्निदेव आप उन जगत प्रसिद्ध लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलायें जिनके आवाहन करने पर मै सुवर्ण,गौ, अश्व और पुत्र-पौत्रदि को प्राप्त करूँ।

३. जिस देवी के आगे और मध्य में रथ है अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ से जुते हुए हैं,ऐसे रथ में बैठी हुई, हथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली माता लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूँ। दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता वह माता लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करें।

४. जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मंद हास्यायुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से ओत प्रोत है एवं दया से आद्र ह्र्दय वाली देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तो के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली, कमल के ऊपर विराजमान,कमल के सदृश्य गृह मैं निवास करने वाली संसार प्रसिद्ध माता लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूँ।

५. चंद्रमा के समान प्रकाश वाली प्रकृत कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवों से पूजित अत्यंत दानशीला,कमल के मध्य रहने वाली,सभी की रक्षा करने वाली एवं आश्रयदात्री,जगद्विख्यात उन माँ लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता हूँ। अतः मैं आपका आश्रय लेता हूँ।

६. हे सूर्य के समान कांति वाली देवी आपके तेजोमय प्रकाश से बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष विशेष उत्पन्न हुआ, तदन्तर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ, उस बिल्व वृक्ष का फल मेरे बाह्य और आभ्यन्तर की दरिद्रता को नष्ट करें।

७. हे मातालक्ष्मी! देवसखा अर्थात श्री महादेव के सखा इन्द्र,कुबेरादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात मैं अग्निदेव की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात चिंतामणि के साथ या कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ,कीर्ति कुबेर की कोशशाला या यश मुझे प्राप्त हो अर्थात धन और यश दोनों ही मुझे प्राप्त हों,मैं इस संसार में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे लक्ष्मी आप यश और एश्वर्य मुझे प्रदान करें।

Disclaimer : यहां दी गई जानकारियां विभिन्न श्रोतों, साधनों व यायावर व्यक्तियों के मत से लिया गया है, प्रकाशक की सहमती सामिल नहीं है।
सिर्फ जानकारियां दी गई हैं, किसी भी विचार या क्रिया को करना या मानना जातक की अपनी व्यक्तिगत सोच व विवेक पर निर्भर है।

८. भूख एवं प्यास रूपी मल को धारण करने वाली एवं लक्ष्मी की ज्येष्ठ भगिनी दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ अर्थात दूर करता हूँ। हे माता लक्ष्मी आप मेरे घर में अनैश्वर्य तथा धन वृद्धि के प्रतिबंधकविघ्नों को दूर करें।

९. सुगन्धित पुष्प के समर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी न दबने योग्य,धन धान्य से सर्वदा पूर्ण कर गौ,अश्वादि पशुओं की समृद्धि देने वाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा संसार प्रसिद्ध माता लक्ष्मी को मैं अपने घर परिवार मैं सादर बुलाता हूँ।

१०. हे मातालक्ष्मी! मैं आपके प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओ के रूप एवं अन्नों के रूप, इन सभी पदार्थो को प्राप्त करूँ। सम्पति और यश मुझमे आश्रय ले अर्थात मैं लक्ष्मीवान एवं कीर्तिमान बनूँ।

११.कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रक्रस्ट पुत्रवाली हुई हैं, हे ऋषि कर्दम! आप मुझमें अच्छी प्रकार से निवास करें अर्थात कर्दम ऋषि की कृपा होने पर लक्ष्मी को मेरे यहाँ रहना हीं होगा। हे ऋषि कर्दम! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करवायें,केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं है अपितु कमल की माला धारण करने वाली संपूर्ण संसार की माता लक्ष्मी को मेरे घर में निवास करावायें।

१२. जिस प्रकार ऋषि कर्दम की संतति ख्याति से मॉ लक्ष्मी अवतरित हुई उसी प्रकार कल्पान्तर में भी समुन्द्र मंथन द्वारा चौदह रत्नों के साथ माता लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ है। इसी अभिप्राय से कहा जा सकता है कि वरुण देवता स्निग्ध अर्थात मनोहर पदार्थो को उत्पन्न करें। पदार्थो कि सुंदरता ही लक्ष्मी है। माता लक्ष्मी के आनंद, कर्दम ,चिक्लीत और श्रित-ये चार पुत्र हैं। इनमे श्री चिक्लीत से प्रार्थना की गई है कि हे श्रीचिक्लीत नामक लक्ष्मी पुत्र! आप मेरे गृह में निवास करें, केवल आप हीं नहीं,अपितु दिव्यगुण युक्त सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास करायें।

१३. हे अग्निदेव! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात दिग्गजों (हाथियों) के सूंडाग्र से अभिषिच्यमाना (आद्र शारीर वाली) पुष्टि को देने वाली अथवा पुष्टिरूपा रक्त और पीतवर्णवाली,कमल कि माला धारण करने वाली,संसार को प्रकाशित करने वाली प्रकाश स्वरुप माता लक्ष्मी को बुलायें।

१४. हे अग्निदेव! आप मेरे घर में भक्तों पर सदा दयाद्रचित अथवा समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं,दुष्टों को दंड देने वाली अथवा यष्टिवत् अवलंबनीया (सारांश यह हैं कि, जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरुष चल नहीं सकता,उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता), सुन्दर वर्ण वाली एवं सुवर्ण कि माला वाली सूर्यरूपा (अर्थात जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी,ज्ञान और धन के द्वारा संसार का पालन-पोषण करती है)अतः प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलायें।

१५. हे अग्निदेव ! आप मेरे यहाँ उन जगद्विख्यात मॉ लक्ष्मी को जो मुझे छोड़कर अन्यत्र न जाने वाली हों ,उन्हें बुलायें। जिन माता लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ ,दासी, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

Disclaimer : यहां दी गई जानकारियां विभिन्न श्रोतों, साधनों व यायावर व्यक्तियों के मत से लिया गया है, प्रकाशक की सहमती सामिल नहीं है।
सिर्फ जानकारियां दी गई हैं, किसी भी विचार या क्रिया को करना या मानना जातक की अपनी व्यक्तिगत सोच व विवेक पर निर्भर है।

१६. जो मनुष्य माता लक्ष्मी की कामना करता हो,वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौघृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त कि पंद्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करें।

प्रस्तुत कर्ताः

ज्योतिष, हस्तरेखा, वास्तु, यंत्र-मंत्र की अग्रणी संस्था
अमृत कलश

पाखंड और अंधविश्वास से अलग, पूर्णतः मौलिक व वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित
पौराणिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अनोखा संगम

9836282767, 9748229422, 9123611805

https://astrosociety.in

Disclaimer : यहां दी गई जानकारियां विभिन्न श्रोतों, साधनों व यायावर व्यक्तियों के मत से लिया गया है, प्रकाशक की सहमती सामिल नहीं है।
सिर्फ जानकारियां दी गई हैं, किसी भी विचार या क्रिया को करना या मानना जातक की अपनी व्यक्तिगत सोच व विवेक पर निर्भर है।